

HINDI FILE



DREAM
FOR NATION



DARE
TO SERVE



DELIVER
WITH INTEGRITY

DAILY PRACTICE QUESTIONS

BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM

DATE : **SEPTEMBER 5, 2026**



Comprehensive
Coverage



Exam-Focused
Analysis



Concept Clarity
& Insights



Practice MCQs
with Explanation



Daily Updates,
Better Results



CONTACT INFO:

+91 92896 33341 | +91 96679 33341



EMAIL ID:

info@sixsigmaias.com



WEB PAGE:

www.sixsigmaias.com



ADDRESS:

C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

प्रश्न 1. दिल्ली सल्तनत के दौरान स्थापत्य और सांस्कृतिक संश्लेषण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन-I: भारत में "सच्चे मेहराब" (true arch) और "गुंबद" का उपयोग अपनी संरचनात्मक पूर्णता पर लोदी काल के दौरान 'दोहरे गुंबद' (double dome) की तकनीक की शुरुआत के बाद ही पहुँचा।

कथन-II: भारत-इस्लामिक शैली ने अलंकरण में मानव और पशु आकृतियों के उपयोग से परहेज किया, इसके बजाय सुलेख (calligraphy), अराबेस्क (arabesque) और टेसेलेशन (tessellation) पर भारी भरोसा किया।

उपरोक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

- (a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं और कथन-II, कथन-I की सही व्याख्या है।
- (b) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं और कथन-II, कथन-I की सही व्याख्या नहीं है।
- (c) कथन-I सही है लेकिन कथन-II गलत है।
- (d) कथन-I गलत है लेकिन कथन-II सही है।

उत्तर: (b)

व्याख्या: कथन-I सही है क्योंकि दोहरे गुंबद (जो बाद में हुमायूँ के मकबरे में देखा गया, लेकिन लोदी युग से शुरू हुआ) ने अधिक ऊँचाई और संरचनात्मक सौंदर्य की अनुमति दी। कथन-II भी सही है क्योंकि इस्लामी सिद्धांतों ने सजीव आकृतियों को वर्जित किया था, जिससे ज्यामितीय (टेसेलेशन) और पुष्प डिजाइनों का विकास हुआ। हालाँकि, आकृतियों का अभाव एक धार्मिक/सौंदर्यपरक विकल्प है न कि "संरचनात्मक व्याख्या" कि दोहरा गुंबद क्यों विकसित किया गया था (जो कि आंतरिक अनुपात के लिए एक इंजीनियरिंग समाधान था)।

प्रश्न 2. "जीव और समष्टियाँ" (Organisms and Populations) के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा उस घटना का सबसे अच्छा वर्णन करता है जहाँ जनसंख्या घनत्व बढ़ने पर जनसंख्या की वृद्धि दर कम हो जाती है, और अंततः एक पठार (स्थिरता) तक पहुँच जाती है?

- (a) r-चयनित प्रजातियों में ज्यामितीय क्षीणन (Geometric attenuation)
- (b) घनत्व-निर्भर विनियमन की नकारात्मक प्रतिक्रिया (Negative feedback)
- (c) स्टोकेस्टिक पर्यावरणीय स्टोकेस्टिकता (Stochastic environmental stochasticity)
- (d) गॉस का प्रतिस्पर्धी अपवर्जन सिद्धांत (Competitive exclusion principle)

उत्तर: (b)

व्याख्या: यह लॉजिस्टिक ग्रोथ मॉडल ($\frac{dN}{dt} = rN[(K-N)/K]$) को संदर्भित करता है। जैसे-जैसे N (जनसंख्या) वहन क्षमता (K) के करीब पहुँचती है, संसाधन सीमित हो जाते हैं, जिससे मृत्यु दर बढ़ जाती है या जन्म दर कम हो जाती है। यह घनत्व-निर्भर विनियमन का एक उत्कृष्ट उदाहरण है जो जनसंख्या को वहन क्षमता पर स्थिर करने के लिए नकारात्मक फीडबैक लूप के रूप में कार्य करता है।

प्रश्न 3. "खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र" (Open Economy Macroeconomics) और भुगतान संतुलन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. चालू खाते (Current Account) में निरंतर घाटा हमेशा आर्थिक कमजोरी का संकेत होता है, क्योंकि इसका तात्पर्य है कि देश शेष विश्व का शुद्ध ऋणी है।
2. "मार्शल-लर्नर स्थिति" (Marshall-Lerner Condition) सुझाव देती है कि मुद्रा का अवमूल्यन व्यापार संतुलन में तभी सुधार करेगा जब निर्यात और आयात की मांग की मूल्य लोच का योग एक से अधिक हो।
3. प्रबंधित फ्लोटिंग विनिमय दर प्रणाली (managed floating exchange rate system) के तहत, केंद्रीय बैंक मुद्राओं की एक टोकरी के साथ एक निश्चित समानता (fixed parity) को सख्ती से बनाए रखने के लिए विदेशी मुद्रा बाजार में हस्तक्षेप करता है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (a)

व्याख्या: * कथन 1 गलत है: चालू खाते का घाटा मजबूती का संकेत हो सकता है यदि यह निवेश के उच्च स्तर (पूँजीगत वस्तुओं का आयात) द्वारा संचालित हो जो भविष्य की उत्पादकता को बढ़ावा देगा।

- **कथन 2 सही है:** व्यापार घाटे को ठीक करने के लिए सफल अवमूल्यन के लिए यह मौलिक शर्त है।
- **कथन 3 गलत है:** "प्रबंधित फ्लोट" में, केंद्रीय बैंक अस्थिरता को कम करने के लिए हस्तक्षेप करता है, लेकिन कोई "सख्त निश्चित समानता" नहीं होती है; वह "स्थिर विनिमय दर" (Fixed Exchange Rate) प्रणाली की परिभाषा होगी।

प्रश्न 4. भारतीय राजनीति में "कांग्रेस प्रणाली की चुनौतियां और पुनर्स्थापना" के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. "सिंडिकेट" पार्टी के भीतर शक्तिशाली कांग्रेस नेताओं का एक अनौपचारिक समूह था जिन्होंने लाल बहादुर शास्त्री और इंदिरा गांधी को प्रधानमंत्री के रूप में स्थापित करने में निर्णायक भूमिका निभाई थी।
2. 1967 के आम चुनावों को अक्सर "राजनीतिक भूकंप" के रूप में वर्णित किया जाता है क्योंकि कांग्रेस ने आजादी के बाद पहली बार लोकसभा में अपना बहुमत खो दिया था।
3. "प्रिवी पर्स" का उन्मूलन इंदिरा गांधी द्वारा गरीब-समर्थक, समाजवादी छवि पेश करने के लिए अपनाए गए "दस सूत्री कार्यक्रम" का एक प्रमुख तत्व था।
4. सुप्रीम कोर्ट ने प्रसिद्ध महाराजा माधव राव सिंधिया मामले में प्रिवी पर्स को खत्म करने के सरकार के फैसले को बरकरार रखा।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर: (b)

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है:** के. कामराज और एस.के. पाटिल जैसे नेताओं ने सिंडिकेट बनाया था।
- **कथन 2 गलत है:** 1967 में, कांग्रेस ने लोकसभा में अपना बहुमत बरकरार रखा (हालांकि कम अंतर के साथ), लेकिन नौ राज्यों में सत्ता खो दी।
- **कथन 3 सही है:** यह सिंडिकेट के खिलाफ सत्ता मजबूत करने के लिए उनके वामपंथी झुकाव का हिस्सा था।
- **कथन 4 गलत है:** सुप्रीम कोर्ट ने मूल रूप से प्रिवी पर्स को खत्म करने वाले राष्ट्रपति के आदेश को रद्द कर दिया था; जिसके बाद सरकार को अदालत के फैसले को पलटने के लिए एक संवैधानिक संशोधन (26वां संशोधन, 1971) लाना पड़ा।

प्रश्न 5. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R1 और R2) के रूप में लेबल किया गया है:

अभिकथन (A): "भारत के विशाल मैदान" अत्यधिक उच्च जनसंख्या घनत्व और गहन निर्वाह कृषि की विशेषता रखते हैं।

कारण (R1): इस क्षेत्र में गहरे जलोढ़ निक्षेप हैं जो अत्यधिक उपजाऊ मिट्टी और हिमालयी नदियों के माध्यम से बारहमासी जल की आपूर्ति प्रदान करते हैं।

कारण (R2): मैदानों का समतल भूभाग परिवहन के घने नेटवर्क और शहरी औद्योगिक समूहों के विकास की सुविधा प्रदान करता है।

नवीनतम UPSC पैटर्न के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

- (a) R1 और R2 दोनों सही हैं और A के स्वतंत्र कारण हैं।
- (b) R1 और R2 दोनों सही हैं, लेकिन केवल R1 ही A का प्राथमिक कारण है।
- (c) R1 सही है लेकिन R2 गलत है।
- (d) अभिकथन A गलत है, लेकिन R1 और R2 सही हैं।

उत्तर: (a)

व्याख्या: दोनों कारण उच्च जनसंख्या घनत्व में योगदान करते हैं। R1 कृषि उत्पादकता (गहन निर्वाह) की व्याख्या करता है, जो एक बड़ी ग्रामीण आबादी का समर्थन करती है। R2 सामाजिक-आर्थिक बुनियादी ढांचे (परिवहन और शहर) की व्याख्या करता है, जो शहरी घनत्व का समर्थन करता है। साथ में, वे भारत-गंगा के मैदानों के "मानव भूगोल" की व्याख्या करते हैं।

दैनिक अभ्यास प्रश्न – करंट अफेयर्स अनुभाग से

प्रश्न 1. थिकसे मठ (Thiksey Monastery) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. थिकसे मठ तिब्बती बौद्ध धर्म की गेलुग्पा (Gelugpa) परंपरा से संबंधित है और ल्हासा के पोताला पैलेस (Potala Palace) से मिलती-जुलती अपनी बहु-स्तरीय वास्तुकला के लिए जाना जाता है।
2. लद्दाख में सिंधु नदी घाटी के दाहिने तट पर इसकी स्थिति इसे ट्रांस-हिमालयी क्षेत्र के सांस्कृतिक परिदृश्य में रखती है, जहाँ तिब्बती बौद्ध परंपराओं ने ऐतिहासिक रूप से मध्य एशियाई और हिमालयी सांस्कृतिक धाराओं के साथ अंतःक्रिया की है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं? (a) केवल एक (b) दोनों कथन (c) कोई भी कथन नहीं (d) केवल कथन 1

उत्तर: (b) दोनों कथन

विस्तृत व्याख्या:

- **कथन 1 सही है:** लेह के पास स्थित थिकसे गोम्पा (Thiksey Gompa), तिब्बती बौद्ध धर्म के गेलुग्पा (पीली टोपी/Yellow Hat) संप्रदाय का एक प्रमुख मठ है। ल्हासा में पोताला पैलेस के समान दिखने के कारण, इसकी विशिष्ट ऊर्ध्वाधर रूप से स्तरीय वास्तुकला ने इसे "मिनी पोताला" (Mini Potala) का विवरण दिया है। इसकी स्थापना 1433 ईस्वी में हुई थी।
- **कथन 2 सही है:** यह मठ लेह से लगभग 19 किमी पूर्व में सिंधु नदी घाटी की ओर देखने वाली एक पहाड़ी पर स्थित है। इसका स्थान न केवल भौगोलिक रूप से बल्कि सांस्कृतिक रूप से भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि लद्दाख व्यापक ट्रांस-हिमालयी सांस्कृतिक क्षेत्र का हिस्सा है जहाँ तिब्बती बौद्ध परंपराओं का विकास हुआ और उन्होंने पड़ोसी हिमालयी तथा मध्य एशियाई प्रभावों के साथ अंतःक्रिया की।

UPSC ट्रैप (UPSC Trap): यूपीएससी ट्रैप थिकसे को केवल एक वास्तुशिल्प स्मारक के रूप में देखना है। इसका महत्व लद्दाखी भूगोल, तिब्बती बौद्ध धर्म, हिमालयी सांस्कृतिक इतिहास और मठवासी वास्तुकला के चौराहे (संगम) पर निहित है।

प्रश्न 2. भारतीय सार्वजनिक पदाधिकारियों द्वारा विदेशी दौरों के लिए राजनीतिक मंजूरी (Political Clearance) के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा कथन सबसे उपयुक्त है?

(a) यह किसी भी निर्वाचित प्रतिनिधि द्वारा विदेशी दौरा शुरू करने से पहले भारत के राष्ट्रपति द्वारा दी जाने वाली एक संवैधानिक मंजूरी (constitutional clearance) है।

- (b) यह विदेश मंत्रालय (MEA) द्वारा संसाधित राजनीतिक दृष्टिकोण से मिलने वाली एक स्वीकृति है, जो दौरे के उद्देश्य, प्रस्तावित जुड़ाव और भारत के राजनयिक हितों जैसे कारकों को ध्यान में रखती है।
- (c) यह आर्थिक मामलों के विभाग द्वारा जारी की जाने वाली एक वित्तीय मंजूरी (financial clearance) है और यह मुख्य रूप से विदेशी मुद्रा व्यय से संबंधित है।
- (d) यह विशेष रूप से गृह मंत्रालय द्वारा भारत के साथ भूमि सीमा साझा करने वाले देशों के दौरों के लिए जारी की जाने वाली सुरक्षा मंजूरी (security clearance) है।

उत्तर: (b)

विस्तृत व्याख्या:

राजनीतिक मंजूरी (Political Clearance) अनिवार्य रूप से निर्दिष्ट विदेशी दौरों के लिए राजनीतिक/राजनयिक दृष्टिकोण से मिलने वाली एक स्वीकृति है। विदेश मंत्रालय (MEA) दौरे के उद्देश्य और औचित्य, प्रस्तावित बैठकों और भारत के द्विपक्षीय तथा राजनयिक हितों जैसे कारकों को ध्यान में रखते हुए ऐसे प्रस्तावों को संसाधित करता है। विदेश मंत्रालय का संसद और समन्वय प्रभाग (Parliament & Coordination Division) विशेष रूप से आधिकारिक दौरों और सम्मेलनों के लिए राजनीतिक मंजूरी को संभालता है।

इस प्रक्रिया में एक ऑनलाइन ई-पॉलिटिकल क्लियरेंस सिस्टम (e-Political Clearance System) है, जिसके माध्यम से आवेदन जमा किए जा सकते हैं। यह प्रणाली अन्य मंजूरीयों से अलग है जो दौरे की परिस्थितियों के आधार पर आवश्यक हो सकती हैं।

महत्वपूर्ण UPSC अंतर:

- राजनीतिक मंजूरी (Political clearance) → विदेश मंत्रालय (MEA) → राजनयिक/राजनीतिक दृष्टिकोण

इसे निम्नलिखित के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए:

- वित्तीय मंजूरी (Financial clearance) → वित्तीय/व्यय संबंधी विचार
- अथवा सुरक्षा संबंधी मंजूरी (Security clearance) → संबंधित सुरक्षा अधिकारी।

तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी के प्रस्तावित अमेरिकी दौरे के रद्द होने से जुड़े हालिया विवाद ने इस अवधारणा को करंट अफेयर्स में ला दिया।

प्रश्न 3. एशियाई विकास बैंक (ADB) और भारत के साथ इसके संबंधों के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- भारत एशियाई विकास बैंक का एक संस्थापक सदस्य है और इसके सबसे बड़े शेयरधारकों में से एक है।
- एडीबी में सदस्यों की मतदान शक्ति (voting power) उनकी पूंजी सदस्यता (capital subscription) की परवाह किए बिना पूरी तरह से 'एक देश, एक वोट' के सिद्धांत पर आधारित है।
- भारत के साथ एडीबी का जुड़ाव सार्वजनिक क्षेत्र के वित्तपोषण और निजी क्षेत्र के विकास तथा परिवर्तनकारी निवेशों पर बढ़ते जोर दोनों को शामिल करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) सभी तीन (d) कोई भी नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

विस्तृत व्याख्या:

- **कथन 1 सही है:** भारत एडीबी का एक संस्थापक सदस्य है और वर्तमान में पर्याप्त शेयरधारिता और मतदान शक्ति के साथ इसका चौथा सबसे बड़ा शेयरधारक है।
- **कथन 2 गलत है:** एडीबी शुद्ध रूप से 'एक-देश-एक-वोट' प्रणाली पर काम नहीं करता है। मतदान शक्ति बुनियादी वोटों के साथ-साथ सदस्यों की पूंजी सदस्यता को दर्शाती है। इसलिए, बड़े शेयरधारकों के पास अधिक मतदान भार (voting weight) होता है।
- **कथन 3 सही है:** भारत के साथ एडीबी का जुड़ाव पारंपरिक संप्रभु परियोजना ऋण से परे तक विस्तृत है। इसके वर्तमान दृष्टिकोण में बहु-क्षेत्रीय और परिवर्तनकारी संचालन, निजी क्षेत्र का विकास, बुनियादी ढांचा, कौशल, शहरी विकास और रोजगार सृजन शामिल हैं। एडीबी 2028-2032 के लिए भारत की अगली देश साझेदारी रणनीति (country partnership strategy) के लिए प्रारंभिक कार्य भी कर रहा है।

अवधारणात्मक ट्रैप (Conceptual Trap): एडीबी को सख्त 'एक-सदस्य-एक-वोट' सिद्धांत के तहत काम करने वाले संस्थानों के साथ भ्रमित करना अवधारणात्मक ट्रैप है। कई बहुपक्षीय विकास बैंकों की तरह, एडीबी पूंजी-आधारित मतदान शक्ति के साथ बुनियादी मतदान अधिकारों को जोड़ता है।

प्रश्न 4. मोबाइल फोन विनिर्माण योजना (MPMS) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह योजना न केवल हैंडसेट उत्पादन का विस्तार करना चाहती है बल्कि घरेलू मूल्यवर्धन (domestic value addition) को गहरा करना और वैश्विक इलेक्ट्रॉनिक्स मूल्य श्रृंखलाओं में भारत की स्थिति को मजबूत करना चाहती है।
2. इस योजना के तहत प्रोत्साहन पात्र बिक्री से जुड़े हैं, जिनमें विभेदित दरों (differentiated rates) और प्रमुख घटकों की घरेलू सोर्सिंग तथा डिज़ाइन व आरएंडडी करने वाले भारतीय ब्रांडों के लिए अतिरिक्त सहायता शामिल है।
3. इस योजना को बड़े पैमाने पर इलेक्ट्रॉनिक्स निर्माण के लिए उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना (PLI Scheme for Large Scale Electronics Manufacturing) के सीधे प्रतिस्थापन के रूप में पेश किया गया था, जिसमें समान उद्देश्य, अवधि और प्रोत्साहन संरचना थी।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) सभी तीन (d) कोई भी नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

विस्तृत व्याख्या:

- **कथन 1 सही है:** जुलाई 2026 में स्वीकृत और तत्पश्चात इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) द्वारा अधिसूचित MPMS का बजटीय परिव्यय ₹62,500 करोड़ है। इसका उद्देश्य उत्पादन का विस्तार करना, घरेलू मूल्यवर्धन को गहरा करना, आपूर्ति-श्रृंखला लचीलेपन को मजबूत करना और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाना है। यह भारतीय ब्रांडों, डिज़ाइन और आरएंडडी (R&D) क्षमताओं को प्रोत्साहित करने का भी प्रयास करता है।
- **कथन 2 सही है:** यह योजना 2.25% से 5% तक की विभेदित दरों पर पात्र बिक्री पर प्रोत्साहन प्रदान करती है। यह प्रमुख घटकों/उप-संयोजनों (sub-assemblies) की घरेलू सोर्सिंग से जुड़े 1.5% तक के अतिरिक्त प्रोत्साहन और उत्पाद डिज़ाइन व आरएंडडी से जुड़े भारतीय ब्रांडों के लिए अतिरिक्त 3% प्रोत्साहन भी प्रदान करती है।

- **कथन 3 गलत है:** MPMS को केवल नए नाम के तहत एक ही योजना के रूप में नहीं माना जाना चाहिए। पूर्ववर्ती PLI-LSEM योजना 31 मार्च 2026 को समाप्त हो गई, जबकि MPMS वित्त वर्ष 2026-27 से वित्त वर्ष 2030-31 के लिए एक नया पाँच-वर्षीय ढांचा पेश करती है जिसमें घरेलू सोर्सिंग, भारतीय ब्रांडों, डिज़ाइन और आरएंडडी के उद्देश्य से विभेदित प्रोत्साहन और अतिरिक्त घटक शामिल हैं।

गहरा नीतिगत बदलाव महत्वपूर्ण है:

- पहले का ध्यान → पैमाना और विनिर्माण
- विस्तारित MPMS का ध्यान → पैमाना + घरेलू मूल्यवर्धन + आपूर्ति-श्रृंखला लचीलापन + भारतीय ब्रांड + डिज़ाइन/आरएंडडी।

यह असेंबली-संचालित विनिर्माण से आगे बढ़कर इलेक्ट्रॉनिक्स मूल्य श्रृंखला में अधिक भागीदारी की ओर भारत के प्रयास को दर्शाता है।

प्रश्न 5. टेरियर साइबर क्वेस्ट 2026 (TCQ 3.0) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह भारतीय सेना की प्रादेशिक सेना (Territorial Army) द्वारा साइबरपीस (CyberPeace) के सहयोग से आयोजित किया जाता है और इसका उद्देश्य सशस्त्र बलों को शिक्षाविदों, उद्योग और अनुसंधान संस्थानों की तकनीकी प्रतिभाओं से जोड़ना है।
2. इसके उद्देश्यों में स्वदेशी साइबर क्षमताओं को विकसित करना, कमजोरियों (vulnerabilities) की पहचान करना और साइबर व सूचना-क्षेत्र के खतरों के खिलाफ भारत की तैयारियों को मजबूत करना शामिल है।
3. इसका 'बग हंटिंग' (Bug Hunting) ट्रैक एक ऑनलाइन 'कैप्चर-द-फ्लैग' अर्हता से शुरू होता है और एक प्रत्यक्ष, व्यक्तिगत सैंडबॉक्स वातावरण में समाप्त होता है।
4. यह पहल पहले से ही सशस्त्र बलों में सेवारत कर्मियों तक सीमित है क्योंकि रक्षा प्रणालियों से जुड़ी साइबर-सुरक्षा चुनौतियों तक पहुंच को नागरिक भागीदारी के साथ असंगत माना जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) केवल तीन (d) सभी चार

उत्तर: (c) केवल तीन

विस्तृत व्याख्या:

- **कथन 1 सही है:** TCQ 3.0 टेरियर साइबर क्वेस्ट का तीसरा संस्करण है, जिसे भारतीय सेना की प्रादेशिक सेना द्वारा साइबरपीस के सहयोग से शुरू किया गया है। यह अकादमिक, उद्योग, अनुसंधान संस्थानों, सरकारी संगठनों और सशस्त्र बलों की तकनीकी प्रतिभाओं को एक साथ लाने का प्रयास करता है।
- **कथन 2 सही है:** यह पहल राष्ट्रीय सुरक्षा से प्रासंगिक स्वदेशी समाधानों को प्रोत्साहित करते हुए AI, साइबर सुरक्षा, खतरा शमन और डिजिटल जागरूकता सहित समकालीन रक्षा, साइबर सुरक्षा और सूचना-क्षेत्र की चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित करती है।
- **कथन 3 सही है:** बग हंटिंग ट्रैक एक ऑनलाइन कैप्चर-द-फ्लैग (CTF) क्वालीफायर के साथ शुरू होता है और एक व्यक्तिगत लाइव सैंडबॉक्स फिनाले में समाप्त होता है। इसका उद्देश्य सिम्युलेटेड क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर में कमजोरियों की पहचान करना और उन्हें दस्तावेज करना है।

- **कथन 4 गलत है:** यह जानबूझकर बनाया गया ट्रैप (trap) है। TCQ 3.0 को स्पष्ट रूप से सशस्त्र बलों के साथ-साथ शिक्षाविदों, उद्योग और अनुसंधान संस्थानों से नागरिक तकनीकी प्रतिभाओं को एक साथ लाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसलिए, यह बंद सैन्य-केवल अभ्यास के बजाय राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक खुले-नवाचार मॉडल (open-innovation model) का उदाहरण है।

इसका रणनीतिक महत्व यह स्वीकार करने में निहित है कि समकालीन साइबर रक्षा के लिए पारंपरिक सैन्य संरचनाओं से परे विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है। एथिकल हैकर्स, सॉफ्टवेयर डेवलपर्स, AI शोधकर्ता और साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ कमजोरियों की पहचान करने और स्वदेशी समाधान विकसित करने में योगदान दे सकते हैं।

प्रश्न 6. टिटिकाका झील (Lake Titicaca) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह एंडीज (Andes) पर्वतमाला में स्थित है और पेरू तथा बोलीविया द्वारा साझा की जाती है।
2. यह देसागुएदेरो नदी (Desaguadero River) के माध्यम से अटलांटिक जल निकासी प्रणाली (Atlantic drainage system) से जुड़ी हुई है।
3. यह अत्यधिक ऊंचाई पर स्थित है और व्यापक रूप से बड़े वाणिज्यिक जहाजों के लिए दुनिया की सबसे ऊंची नौगम्य (navigable) झीलों में से एक के रूप में जानी जाती है।
4. यह पूरी तरह से बोलीविया के भीतर स्थित है और इसलिए पेरू के साथ इसका कोई प्रत्यक्ष भौगोलिक संबंध नहीं है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) केवल तीन (d) सभी चार

उत्तर: (c) केवल तीन

विस्तृत व्याख्या:

- **कथन 1 सही है:** टिटिकाका झील पेरू और बोलीविया की सीमा पर एंडीज पर्वतमाला में स्थित है। यह दक्षिण अमेरिका की सबसे प्रमुख उच्च-ऊंचाई वाली झीलों में से एक है।
- **कथन 2 सही है:** टिटिकाका झील देसागुएदेरो नदी के माध्यम से दक्षिण की ओर बहती है, जो इसे व्यापक अल्टीप्लानो जल निकासी प्रणाली में पूपो झील (Lake Poopó) से जोड़ती है। जलवैज्ञानिक प्रणाली अंततः सीधे अटलांटिक महासागर तक पहुंचने के बजाय अल्टीप्लानो के व्यापक अंतःस्थलीय (endorheic) जल निकासी का हिस्सा बनती है।
- **कथन 3 सही है:** समुद्र तल से लगभग 3,812 मीटर की ऊंचाई पर स्थित, टिटिकाका झील दुनिया की सबसे ऊंची बड़ी नौगम्य झीलों में से एक है और ऐसी अत्यधिक ऊंचाई पर नौकायन के लिए उल्लेखनीय है।
- **कथन 4 गलत है:** टिटिकाका झील पेरू और बोलीविया दोनों द्वारा साझा की जाती है। इसके उत्तरी और पश्चिमी भाग पेरू से जुड़े हैं, जबकि इसका दक्षिण-पूर्वी भाग बोलीविया में स्थित है।

मानचित्र-आधारित UPSC मुख्य बिंदु (Map-based UPSC takeaway): स्थानिक श्रृंखला (spatial chain) को इस प्रकार याद रखा जाना चाहिए: प्रशांत महासागर → एंडीज → टिटिकाका झील → पेरू-बोलीविया सीमा → अल्टीप्लानो

आस-पास की महत्वपूर्ण भौगोलिक विशेषताओं में शामिल हैं:

- उत्तर-पश्चिम में पेरू;
- दक्षिण-पूर्व में बोलीविया;

- झील को घेरने वाली एंडीज पर्वतमाला;
- बोलीविया में और दक्षिण में स्थित पूपो झील;
- टिटिकाका और पूपो प्रणालियों को जोड़ने वाली देसागुएदेरो नदी।

दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

GS-1: इतिहास

प्रश्न 1. "ईसा पूर्व मध्य-सहस्राब्दी (Mid-first millennium BCE) को अक्सर विश्व इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ माना जाता है।" इस कथन के आलोक में चर्चा कीजिए कि भारत में नई धार्मिक परंपराओं के उदय ने मौजूदा सामाजिक और दार्शनिक व्यवस्था को कैसे चुनौती दी।

नमूना उत्तर: ईसा पूर्व मध्य-सहस्राब्दी दुनिया भर में तीव्र बौद्धिक उथल-पुथल का काल था, जिसमें यूनान में सुकरात, ईरान में जरथुस्त्र और भारत में महावीर और बुद्ध का उदय हुआ। भारतीय संदर्भ में, इस युग ने वैदिक बलि परंपरा से हटकर आंतरिक दार्शनिक जांच और सामाजिक समतावाद की ओर एक महत्वपूर्ण प्रस्थान देखा।

सामाजिक व्यवस्था को चुनौती:

प्राथमिक चुनौती 'वर्ण व्यवस्था' को दी गई थी। ब्राह्मणवादी ग्रंथों ने जन्म-आधारित पदानुक्रम पर जोर दिया। इसके विपरीत, बौद्ध और जैन परंपराओं ने एक "प्रति-संस्कृति" (counter-culture) प्रदान की:

- **सार्वभौमिक सदस्यता:** संघ के दरवाजे जाति या लिंग की परवाह किए बिना सभी के लिए खोल दिए गए।
- **अनुष्ठानिक श्रेष्ठता की अस्वीकृति:** बुद्ध ने तर्क दिया कि सामाजिक स्थिति एक दैवीय आदेश के बजाय एक मानवीय संरचना है। उन्होंने अनुष्ठानिक पवित्रता पर 'मेता' (मैत्री) और 'करुणा' पर जोर दिया।

दार्शनिक बदलाव:

दार्शनिक रूप से, यह युग "बलि पंथ" से "मुक्ति की खोज" की ओर बढ़ गया:

- **व्यक्तिगत एजेंसी:** वेदों के विपरीत, जो पुजारियों के माध्यम से देवताओं को प्रसन्न करने पर केंद्रित थे, नए विचारकों ने जोर दिया कि मुक्ति व्यक्तिगत प्रयास और नैतिक आचरण (अष्टांगिक मार्ग) का परिणाम है।
- **नियतिवाद बनाम कर्म:** जहाँ आजीवक संप्रदाय ने नियतिवाद (नियति) का प्रचार किया, वहीं बौद्ध और जैन धर्म ने कर्म के नियम पर जोर दिया—कि व्यक्ति के कार्य ही उसका भाग्य निर्धारित करते हैं, जिससे व्यक्ति सशक्त हुआ।

- **वास्तविकता की प्रकृति:** कुटागारशालाओं (नुकीली छत वाली झोपड़ियाँ) में होने वाली बहसों इस बात पर केंद्रित थीं कि क्या आत्मा स्थायी है या दुनिया निरंतर परिवर्तन (अनिच्छा) की स्थिति में है।

निष्कर्ष: इस काल ने भारतीय परिदृश्य को एक अनुष्ठान-केंद्रित समाज से ज्ञान-केंद्रित समाज में बदल दिया। इस बदलाव की स्थापत्य विरासत, जिसे सांची और भरहुत के स्तूपों में देखा जा सकता है, भारतीय सभ्यता पर इन "विधर्मों" स्कूलों के स्थायी प्रभाव का प्रमाण है।

GS-2: राजव्यवस्था (Polity)

प्रश्न 2. बहु-ध्रुवीय दुनिया में यूरोपीय संघ (EU) और आसियान (ASEAN) जैसे क्षेत्रीय संगठनों की "शक्ति के वैकल्पिक केंद्रों" के रूप में प्रभावशीलता का आकलन कीजिए। वे पारंपरिक महाशक्तियों के आधिपत्य (Hegemony) को किस हद तक सीमित करते हैं?

नमूना उत्तर: द्विध्रुवीय शीत युद्ध संरचना के पतन के साथ, क्षेत्रीय संगठन शक्तिशाली "शक्ति के वैकल्पिक केंद्रों" के रूप में उभरे हैं। यूरोपीय संघ (EU) और दक्षिण-पूर्वी एशियाई राष्ट्र संघ (ASEAN) इस घटना के दो अलग-अलग मॉडलों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

यूरोपीय संघ: एक अति-राष्ट्रीय शक्ति (Supranational Power)

यूरोपीय संघ एक आर्थिक समुदाय से एक राजनीतिक इकाई के रूप में विकसित हुआ है जिसका अपना ध्वज, गान और मुद्रा (यूरो) है।

- **आर्थिक प्रभाव:** विश्व व्यापार में इसकी हिस्सेदारी लगभग अमेरिका के बराबर है, जिससे इसे WTO में भारी लाभ मिलता है।
- **राजनयिक वजन:** इसके दो पूर्व/वर्तमान सदस्य UNSC में स्थायी सीट रखते हैं। पर्यावरण मानकों (GDPR, ग्रीन डील) के संदर्भ में इसकी "सॉफ्ट पावर" वैश्विक मानदंडों को निर्धारित करती है।
- **सीमाएँ:** यूरोपीय संघ में एक एकीकृत सैन्य नीति का अभाव है (जैसे इराक युद्ध या यूक्रेन पर आंतरिक विभाजन) और यह "यूरो-संदेहवाद" और राष्ट्रवाद (जैसे ब्रेक्सिट) का सामना कर रहा है।

आसियान: "आसियान तरीका" (The ASEAN Way)

आसियान संप्रभुता और अहस्तक्षेप पर केंद्रित एक अधिक अनौपचारिक, सहकारी मॉडल का प्रतिनिधित्व करता है।

- **आर्थिक एकीकरण:** आसियान आर्थिक समुदाय और प्रमुख शक्तियों के साथ मुक्त व्यापार समझौतों (FTAs) के माध्यम से, यह वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया है।
- **सुरक्षा संरचना:** आसियान क्षेत्रीय मंच (ARF) उन कुछ मंचों में से एक है जहाँ अमेरिका, चीन और रूस जैसी महाशक्तियाँ सुरक्षा संवाद में शामिल होती हैं।
- **सीमाएँ:** इसका सर्वसम्मति-आधारित दृष्टिकोण अक्सर म्यांमार सैन्य तख्तापलट या दक्षिण चीन सागर विवादों जैसे संकटों के सामने पक्षाघात (paralysis) की ओर ले जाता है।

निष्कर्ष: हालांकि ये संगठन पारंपरिक महाशक्तियों की कच्ची सैन्य शक्ति का मुकाबला नहीं कर सकते, लेकिन वे 'संस्थावाद' (Institutionalism) के माध्यम से आधिपत्य को काफी हद तक नियंत्रित करते हैं। अपने संबंधित क्षेत्रों में "नियम-आधारित व्यवस्था" बनाकर, वे सुनिश्चित करते हैं कि वैश्विक शक्ति किसी एक राजधानी में केंद्रित न हो, जिससे एक अधिक संतुलित, बहु-ध्रुवीय दुनिया सुगम हो सके।

GS-3: अर्थव्यवस्था

प्रश्न 3. कीनेसियन अर्थशास्त्र में "प्रभावी मांग" (Effective Demand) की अवधारणा की व्याख्या कीजिए। एक मंदी के अंतराल (recessionary gap) का सामना कर रही अर्थव्यवस्था में "इन्वेंट्री का अनपेक्षित संचय" एक स्व-सुधार तंत्र के रूप में कैसे कार्य करता है?

नमूना उत्तर: शास्त्रीय अर्थशास्त्र में माना जाता था कि 'आपूर्ति अपनी मांग स्वयं बनाती है'। हालांकि, महामंदी ने इसे गलत साबित कर दिया, जिससे जे.एम. कीन्स ने 'प्रभावी मांग' का सिद्धांत प्रतिपादित किया—समग्र मांग का वह स्तर जो वास्तव में अर्थव्यवस्था में उत्पादन और रोजगार के स्तर को निर्धारित करने में "प्रभावी" होता है।

प्रभावी मांग का सिद्धांत:

एक अर्थव्यवस्था में संतुलन तब प्राप्त होता है जब पूर्व-निर्धारित (Ex-ante) समग्र मांग (\$AD\$) पूर्व-निर्धारित समग्र आपूर्ति (\$AS\$) के बराबर होती है।

$$AD = C + I + G + (X - M)$$

यदि AD पूर्ण-रोजगार स्तर के उत्पादन को खरीदने के लिए अपर्याप्त है, तो अर्थव्यवस्था "अल्प-रोजगार संतुलन" पर स्थिर हो जाती है।

अनपेक्षित इन्वेंट्री की भूमिका:

जब AD नियोजित उत्पादन से कम हो जाता है ($AS > AD$):

- **स्टॉक संचय:** उत्पादित माल बिना बिका रह जाता है। इसे "इन्वेंट्री का अनपेक्षित संचय" कहा जाता है।
- **उत्पादकों को संकेत:** एक फर्म के लिए, बढ़ती इन्वेंट्री एक संकेत है कि उन्होंने बाजार की मांग के सापेक्ष अधिक उत्पादन किया है।
- **सुधार:** अगले उत्पादन चक्र में, फर्म अपने नियोजित उत्पादन को कम करती हैं और लागत में कटौती के लिए श्रमिकों की छंटनी करती हैं।
- **नया संतुलन:** यह प्रक्रिया तब तक जारी रहती है जब तक कि उत्पादन उस स्तर तक नहीं गिर जाता जहाँ वह कम मांग के बराबर हो जाए।

आलोचना: बचत का विरोधाभास (Paradox of Thrift)

कीन्स ने तर्क दिया कि यदि मंदी के दौरान हर कोई अधिक बचत करने की कोशिश करता है (MPS बढ़ाना), तो \$AD\$ और भी गिर जाएगा, जिससे अनपेक्षित इन्वेंट्री का ढेर और गहरा होगा और संतुलन आय का स्तर और भी नीचे चला जाएगा। यह "बचत का विरोधाभास" बताता है कि व्यक्तिगत गुण (बचत) सामूहिक दोष बन सकता है।

निष्कर्ष: राजकोषीय नीति के लिए इन गतिकी को समझना महत्वपूर्ण है। जब इन्वेंट्री में कमी के माध्यम से "स्व-सुधार" बड़े पैमाने पर बेरोजगारी की ओर ले जाता है, तो सरकार को प्रभावी मांग को बढ़ाने और अर्थव्यवस्था को मंदी के जाल से बाहर निकालने के लिए 'स्वायत्त खर्च' (Autonomous Spending) के माध्यम से हस्तक्षेप करना चाहिए।

GS-4: नैतिकता (भावनात्मक बुद्धिमत्ता)

प्रश्न 4. "भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) आपकी भावनाओं को आपके खिलाफ काम करने के बजाय आपके लिए काम करने की क्षमता है।" जन शिकायतों को संभालने और सांप्रदायिक सदभाव बनाए रखने में एक सिविल सेवक के लिए EI के महत्व पर चर्चा कीजिए।

नमूना उत्तर: भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI), जिसे डैनियल गोलमैन ने आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन, प्रेरणा, सहानुभूति और सामाजिक कौशल जैसे घटकों के माध्यम से परिभाषित किया है, अक्सर एक लोक सेवक के लिए तकनीकी IQ से अधिक महत्वपूर्ण होती है। भारतीय प्रशासन के अस्थिर वातावरण में, EI आवेग और क्रिया के बीच एक बफर के रूप में कार्य करती है।

जन शिकायतों को संभालना:

एक सिविल सेवक अक्सर उन नागरिकों से मिलता है जो निराश, क्रोधित या हताश होते हैं।

- **सहानुभूति (Empathy):** सक्रिय रूप से सुनने और सहानुभूति का अभ्यास करके, एक अधिकारी नागरिक की भावनाओं को मान्यता देता है, जो अक्सर तकनीकी समाधान प्रदान किए जाने से पहले ही गुस्से को कम कर देता है।
- **आत्म-नियमन (Self-Regulation):** उच्च EI वाला अधिकारी मौखिक दुर्व्यवहार को व्यक्तिगत रूप से नहीं लेगा। सत्ता-संचालित अहंकार के साथ प्रतिक्रिया करने के बजाय, वे शांत रहते हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि शिकायत प्रकोष्ठ संघर्ष के बजाय समाधान का स्थान बना रहे।

सांप्रदायिक सदभाव बनाए रखना:

सांप्रदायिक तनाव अक्सर "भावनात्मक संक्रमण" (emotional contagion)—डर और नफरत के तेजी से प्रसार—से भड़कता है।

- **सामाजिक कौशल:** दंगे जैसी स्थिति के दौरान, एक DM या SP को धार्मिक नेताओं के साथ बातचीत करनी चाहिए। उच्च सामाजिक कौशल अधिकारी को सामुदायिक रेखाओं के पार विश्वास बनाने की अनुमति देते हैं।

- **धारणा प्रबंधन (Perception Management):** एक नैतिक रूप से सुदृढ़, भावनात्मक रूप से बुद्धिमान नेता भीड़ की "नब्ज" को महसूस कर सकता है। सही भाषा और प्रतीकों का उपयोग करके, वे डर को सुरक्षा की भावना में बदल सकते हैं।

निष्कर्ष: प्रशासन में "शक्ति" एक उपकरण है, लेकिन "EI" स्नेहक (lubricant) है। जबकि कानून कार्रवाई के लिए ढांचा प्रदान करते हैं, EI एक विविध और भावनात्मक समाज में उन कानूनों को लागू करने के लिए आवश्यक "स्पर्श" प्रदान करती है। यह एक "नौकरशाह" को "नेता" में बदल देती है।

Current Affairs: अंतरिक्ष शासन (Space Governance)

प्रश्न 5. बाहरी अंतरिक्ष के तेजी से होते व्यावसायीकरण ने मौजूदा अंतर्राष्ट्रीय कानूनी ढांचे को पीछे छोड़ दिया है। "मेगा-कॉन्स्टेलेशन" और "अंतरिक्ष मलबे" (Space Debris) द्वारा 'स्पेस कॉमन्स' की स्थिरता के लिए उत्पन्न चुनौतियों का मूल्यांकन कीजिए।

नमूना उत्तर: "न्यू स्पेस" युग की विशेषता राज्य के नेतृत्व वाले अन्वेषण से निजी क्षेत्र के प्रभुत्व की ओर बदलाव है। हालांकि इसने अंतरिक्ष तक पहुंच की लागत को कम कर दिया है, लेकिन इसने पृथ्वी की कक्षाओं में "कॉमन्स की त्रासदी" (Tragedy of the Commons) पैदा कर दी है, जिससे अंतरिक्ष गतिविधियों की दीर्घकालिक स्थिरता को खतरा पैदा हो गया है।

अंतरिक्ष शासन के लिए चुनौतियाँ:

- **मेगा-कॉन्स्टेलेशन:** स्पेसएक्स (स्टारलिनक) और अमेज़ॉन (प्रोजेक्ट कुइपर) जैसी कंपनियां लो अर्थ ऑर्बिट (LEO) में हजारों उपग्रह लॉन्च कर रही हैं। इससे कक्षीय भीड़भाड़ होती है, जिससे टकराव का खतरा बढ़ जाता है और जमीन-आधारित खगोल विज्ञान में हस्तक्षेप होता है।
- **अंतरिक्ष मलबा और केसलर सिंड्रोम:** "स्पेस जंक" के 30,000 से अधिक ट्रैक करने योग्य टुकड़ों के साथ, "केसलर सिंड्रोम"—टकराव की एक श्रृंखला प्रतिक्रिया जिससे कुछ कक्षाएं अनुपयोगी हो जाती हैं—का खतरा अब सैद्धांतिक नहीं रहा।
- **पुराना कानूनी ढांचा:** आउटर स्पेस ट्रीटी (1967) और लायबिलिटी कन्वेंशन (1972) उस दुनिया के लिए बनाए गए थे जहाँ केवल कुछ देशों के पास अंतरिक्ष क्षमता थी। उनमें निम्नलिखित पर स्पष्ट नियमों का अभाव है:
 - स्पेस ट्रैफिक मैनेजमेंट (STM)।
 - खगोलीय पिंडों का व्यावसायिक खनन।
 - मलबे के शमन (mitigation) के लिए प्रवर्तन तंत्र।

आगे की राह:

- **स्पेस सिचुएशनल अवेयरनेस (SSA):** अंतरिक्ष वस्तुओं पर डेटा को ट्रैक करने और साझा करने में वैश्विक सहयोग अनिवार्य है। भारत का 'प्रोजेक्ट नेत्रा' (Project NETRA) इसी दिशा में एक कदम है।

- **मानक विकास:** "स्वैच्छिक दिशानिर्देशों" (जैसे UNCOPUOS दिशानिर्देश) से कानूनी रूप से बाध्यकारी "अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष यातायात संहिता" की ओर संक्रमण।
- **सक्रिय मलबा हटाना (ADR):** उन प्रौद्योगिकियों को प्रोत्साहित करना जो कक्षीय पथों को साफ करने के लिए मृत उपग्रहों को "हार्पून" या "नेट" कर सकें।

निष्कर्ष: अंतरिक्ष एक "वैश्विक साझा संसाधन" (Global Commons) है। यदि वर्तमान "गोल्ड रश" मानसिकता बिना मजबूत शासन के जारी रहती है, तो हम भविष्य की पीढ़ियों के लिए उच्च सीमा को बंद करने का जोखिम उठाते हैं। एक नई "स्पेस ट्रीटी 2.0" जो पर्यावरणीय प्रबंधन के साथ व्यावसायिक नवाचार को संतुलित करे, समय की मांग है।

